

दैनिक

नगर छाया

आप की आवाज़....

छाया

कानपुर
14 मार्च, 2022

2

बीजों का प्राकृतिक खेती में योगदान विषय पर कृषक गोष्ठी का आयोजन



कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा एक दिवसीय बीज प्रौद्योगिकी द्वारा प्राकृतिक खेती में योगदान विषयक एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि निदेशक शोध डॉक्टर करम हुसैन ने कहा कि प्राकृतिक खेती का उद्देश्य यह है कि किसान की आमदनी बढ़े और छोटी जोत के किसानों को रोजगार प्राप्त हो। साथ ही हर व्यक्ति को स्वास्थ्यवर्धक भोजन। इसके अतिरिक्त पर्यावरण संतुलन में प्राकृतिक खेती का बड़ा योगदान है। उन्होंने कहा कि भूमि के जल स्तर में वृद्धि होती है साथ ही कचरे का उपयोग कर जैविक खाद बनाने से स्वच्छ भारत मिशन की परिकल्पना साकार होती है। इस अवसर पर डॉक्टर यू डी अवस्थी ने बताया कि प्राकृतिक खेती से भूमि की उपजाऊ क्षमता में वृद्धि हो जाती है साथ ही सिंचाई अंतराल में भी वृद्धि होती है। रासायनिक खादों पर निर्भरता कम होने से प्रति हेक्टेयर लागत कम आती है। साथ ही फसल उत्पादन

गुणवत्ता युक्त होता है जिससे किसानों को अच्छा लाभ प्राप्त हो जाता है। डॉक्टर लालमणि वर्मा ने प्राकृतिक खेती में कृषि यंत्र जैसे हैंप्पी सीडर, सुपर सीडर, मलचर आदि कृषि यंत्रों के प्रयोग विधि एवं उपयोगिता के बारे में जानकारी दी। डॉ. जितेंद्र सिंह ने जैविक कीटनाशकों से फसल की कीड़ों एवं रोगों से सुरक्षा विषयक विस्तार से व्याख्यान दिया। मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने प्राकृतिक खेती में वीजा अमृत, जीवामृत, नीमस्त्र, निर्माण आदि के बनाने की विधि एवं प्रयोग के बारे में जानकारी दी। साथ ही उपस्थित कृषकों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भी दिए गए। कार्यक्रम संयोजक डॉ. सी बी सिंह गंगवार ने बताया कि बेहतर फसल उत्पादन की शुरुआत बेहतर बीज के चुनाव से शुरू होती है। उन्होंने कहा कि अच्छी गुणवत्ता वाले बीज मजबूत और स्वस्थ फसलों की वृद्धि के लिए आवश्यक है। अंत में कार्यक्रम संयोजक डॉ. गंगवार ने सभी अतिथियों का आभार प्रकट किया। इस अवसर पर लगभग 100 से अधिक प्रगतिशील किसान एवं महिलाएं उपस्थित रही।

राष्ट्रीय सहारा

कानपुर 14/03/2022

प्राकृतिक खेती पौष्टिक भोजन के साथ

पर्यावरण संतुलन में भी है मददगार

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

कानपुर।

सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के वीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग ने रविवार को विवि द्वारा अधिग्रहीत जैव संवर्धित गांव अनूपपुर में संगोष्ठी कर किसानों को प्राकृतिक खेती को लेकर जागरूक किया। कार्यक्रम में सौ से अधिक प्रगतिशील महिलामुरुष किसानों ने भाग लिया।

प्राकृतिक खेती में वीज प्रौद्योगिकी का योगदान विषयक गोष्ठी में विवि के निदेशक शोध डॉ. करम हुसैन ने प्राकृतिक तरीकों से खेती करने के लिए किसानों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि वे वीज स्वयं ही तैयार करें। इससे कृषि लागत भी कम होगी। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती व्यक्ति को पौष्टिक भोजन देने के साथ ही पर्यावरण संतुलन में भी मददगार है। इससे भूमि के जलस्तर में वृद्धि होती है। साथ ही कृषि अवशेषों का उपयोग जैविक खाद बनाने में किये जाने से स्वच्छता की परिकल्पना भी साकार होती है। प्राकृतिक



सीएसए ने अनूपपुर गांव में गोष्ठी कर किसानों को किया प्राकृतिक खेती के लिए जागरूक

खेती से किसानों की आय व रोजगार बढ़ने की भी संभावना है।

डॉ. यूडी अवस्थी ने बताया कि प्राकृतिक खेती से भूमि की उपजाऊ क्षमता में

वृद्धि होती है। साथ ही भूमि में जलधारण क्षमता बढ़ने से सिंचाई अंतराल में भी वृद्धि होती है। रासायनिक खादों पर निर्भरता कम होने से कृषि लागत भी कम आती है। गुणवत्तायुक्त फसल मिलने से किसानों को लाभ भी अच्छा होता है। डॉ. लालमणि वर्मा ने प्राकृतिक खेती में कृषि यंत्र जैसे हैप्पी सीडर, सुपर सीडर, मलचर आदि कृषि यंत्रों के प्रयोग विधि एवं उपयोगिता के बारे में जानकारी दी। डॉ. जितेन्द्र सिंह ने जैविक कीटनाशकों से फसल को कीड़ों एवं रोगों से सुरक्षा विषयक व्याख्यान दिया।

मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने प्राकृतिक खेती के बीजामृत, जीवामृत, नीमस्र आदि बनाने की विधि व उनके प्रयोग के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम संयोजक डॉ. सीवी सिंह गंगवार ने किसानों से कहा कि बेहतर फसल उत्पादन की शुरुआत बेहतर वीज के चुनाव से शुरू होती है। उन्होंने कहा कि अच्छी गुणवत्ता वाले वीज मजबूत और स्वस्थ फसलों की वृद्धि के लिए आवश्यक है।

आज का कानपुर

कानपुर से प्रकाशित लखनऊ, उज्जैन, मीतापुर, लखीमपुर खीरी, हमीरपुर, मीरठ, बादा, फतेहपुर, प्रयागराज, इटावा, कन्नौज, गाजीपुर, कानपुर जिला, बहाइच में प्रकाशित

अच्छी गुणवत्ता वाले बीज मजबूत और स्वस्थ फसलों की वृद्धि के लिए आवश्यक-डॉ गंगवार

आज का कानपुर

कानपुर।सीएसए के बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा एक दिवसीय बीज प्रौद्योगिकी द्वारा प्राकृतिक खेती में योगदान विषयक एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि निदेशक शोध डॉक्टर करम हुसैन ने कहा कि प्राकृतिक खेती का उद्देश्य यह है कि किसान की आमदनी बढ़े और छोटी जोत के किसानों को रोजगार प्राप्त हो साथ ही हर व्यक्ति को स्वास्थ्य वर्धक भोजन इसके अतिरिक्त पर्यावरण संतुलन में प्राकृतिक



खेती का बड़ा योगदान है उन्होंने कहा कि भूमि के जल स्तर में वृद्धि होती है साथ ही कचरे का उपयोग कर जैविक खाद बनाने से स्वच्छ भारत मिशन की परिकल्पना साकार होती है। इस अवसर पर डॉक्टर यू डी अवस्थी ने

कहा कि प्राकृतिक खेती से भूमि की उपजाऊ क्षमता में वृद्धि हो जाती है साथ ही सिंचाई अंतराल में भी वृद्धि होती है। रासायनिक खादों पर निर्भरता कम होने से प्रति हेक्टेयर लागत कम आती है साथ ही फसल उत्पादन

गुणवत्ता युक्त होता है जिससे किसानों को अच्छा लाभ प्राप्त हो जाता है डॉक्टर लालमणि वर्मा ने प्राकृतिक खेती में कृषि यंत्र जैसे हैप्पी सीडर, सुपर सीडर, मलचर आदि कृषि यंत्रों के प्रयोग विधि एवं उपयोगिता के बारे में जानकारी दी डॉ जितेंद्र सिंह ने जैविक कीटनाशकों से फसल की कीड़ों एवं रोगों से सुरक्षा विषयक विस्तार से व्याख्यान दिया मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने प्राकृतिक खेती में बीजा अमृत, जीवामृत, नीमस्त्र, निर्माण आदि के बनाने की विधि एवं प्रयोग के बारे में जानकारी दी।

साथ ही उपस्थित कृषकों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भी दिए गए कार्यक्रम संयोजक डॉ सीबी सिंह गंगवार ने बताया कि बेहतर फसल उत्पादन की शुरुआत बेहतर बीज के चुनाव से शुरू होती है उन्होंने कहा कि अच्छी गुणवत्ता वाले बीज मजबूत और स्वस्थ फसलों की वृद्धि के लिए आवश्यक है अंत में कार्यक्रम संयोजक डॉ गंगवार ने सभी अतिथियों का आभार प्रकट किया इस अवसर पर लगभग 100 से अधिक प्रगतिशील किसान एवं महिलाएं उपस्थित रही।

अच्छी गुणवत्ता वाले बीज स्वस्थ फसलों की वृद्धि के लिए आवश्यक

कानपुर। सीएसए के बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा एक दिवसीय बीज प्रौद्योगिकी द्वारा प्राकृतिक खेती में योगदान विषयक एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि निदेशक शोध डॉक्टर करम हुसैन ने कहा कि प्राकृतिक खेती का उद्देश्य यह है कि किसान की आमदनी बढ़े और छोटी जोत के किसानों को रोजगार प्राप्त हो। साथ ही हर व्यक्ति को स्वास्थ्यवर्धक भोजन। इसके अतिरिक्त पर्यावरण संतुलन में प्राकृतिक खेती का बड़ा योगदान है। उन्होंने कहा कि भूमि के जल स्तर में वृद्धि होती है साथ ही कचरे का उपयोग कर जैविक खाद बनाने से स्वच्छ भारत मिशन की परिकल्पना साकार होती है।

दैनिक हिंदुस्तान कानपुर 14/03/2022

जैविक खेती से होगा आमदनी में सुधार

कानपुर। सीएसए के बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की ओर से एक दिवसीय बीज प्रौद्योगिकी द्वारा प्राकृतिक खेती में योगदान विषय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि निदेशक शोध डॉ. करम हुसैन ने कहा कि प्राकृतिक खेती का उद्देश्य किसान की आमदनी बढ़ाना और छोटी जोत के किसानों को रोजगार दिलाना है। इसका लाभ हर परिवार को स्वास्थ्यवर्धक भोजन के रूप में मिलेगा। डॉ. यूडी अवस्थी ने प्राकृतिक खेती से भूमि की उपजाऊ क्षमता के बारे में जानकारी दी।